

राष्ट्रीय शिक्षा नीति: 2020-क्रियान्वयन

National Education Policy: 2020-Implementation



सम्पादक

डॉ. कैलाश सोडाणी

पूर्व कुलपति

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा



उच्च शिक्षा में प्रभावी प्रशासन एवं नेतृत्व - क्रियान्वयन के सोपान

जिनेन्द्र कुमार जैन

वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में यह माना जा चुका है कि उच्च शिक्षा संस्थाओं का प्रभावी प्रशासन एवं नेतृत्व ही सर्वोत्तम संस्कृति एवं नवाचार की रचना के अवसर प्रदान कर सकता है। सर्वोत्तम संस्कृति एवं नवाचार के अवसर कैसे निर्मित किये जायें और उस निर्मित संस्कृति को किस तरह स्थापित किया जाये कि उसके वास्तविक परिणाम हमारी सामाजिक आवश्यकताओं से मिलते-जुलते प्राप्त हो सकें। इस समय हमारे समक्ष यही एक ज्वलंत प्रश्न है। सभी भली-भांति जानते हैं कि नई शिक्षा नीति का अवतार हो चुका है। आवश्यकता केवल शिक्षा नीति के लेखन प्रारूप को वास्तविक क्रियान्वयन की व्यहूरचना में ढालकर निर्धारित आदर्श वाक्यों को न्यूनतम संसाधनों के माध्यम से सार्थक एवं वास्तविक लक्ष्यों को प्राप्त करने का सामर्थ्य विकसित किया जाय। सूचनानुसार देश के केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के लगभग 7000 पद खाली हैं, फिर भी हमें दीर्घकालीन शिक्षा की संस्थागत संरचना में सार्वजनिक विश्वास बनाए रखने के लिए एक लोकप्रिय शैक्षिक प्रशासन के स्थान पर एक प्रभावी परिणामोत्पादक शिक्षा प्रशासन का वातावरण तैयार करना है जो कार्य कठिन न भी हो तो भी चुनौतीपूर्ण तो है ही। हाँ कोई प्रभावी प्रशासन यदि जनता में लोकप्रिय हो जाये तो यह शिक्षा का अच्छा परिणाम माना जा सकता है। क्रियान्वयन के स्तर पर उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रभावी प्रशासन के लिए दो तथ्य शामिल किए जा सकते हैं, प्रथमतः उच्च शिक्षण संस्थाओं में कुशल नेतृत्व की बात है, जो विश्वविद्यालयों में इस तरह का वातावरण निर्मित कर सकता है, जिससे मनुष्य में विचारधारा एवं जीवन शैली की कलात्मकता का न केवल निर्माण होगा, बल्कि उसमें न्यूनतम रोजगार के अवसर खोजने की सामर्थ्य भी